

Rajasthan RSB Assistant Professor (History Sample Paper)

Q1. वर्ष 1919 में ILO के वाशिंगटन शिखर सम्मेलन में भारतीय सरकार की ओर से मजदूरों का प्रतिनिधि निम्नलिखित में से कौन था?

- (a) वी.पी. वाडिया
- (b) एन. एम. जोशी
- (c) सी.एफ. एंड्रयूज
- (d) जोसेफ बपतिस्ता

Ans.(b)

Sol. सही उत्तर है b) एन. एम. जोशी

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) की स्थापना 1919 में वर्साय की संधि के हिस्से के रूप में की गई थी। भारत, ब्रिटिश उपनिवेश होने के बावजूद, इसके संस्थापक सदस्यों में से एक था। पहला अंतर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन 1919 में वाशिंगटन डी.सी. में आयोजित किया गया था।

□ एन. एम. जोशी (नारायण मल्हार जोशी) को 1919 में ILO के वाशिंगटन शिखर सम्मेलन में भारत के पहले श्रमिक प्रतिनिधि के रूप में नामित किया गया था। वे शुरुआती भारतीय ट्रेड यूनियन आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्ति थे और बाद में 1920 में अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका ILO के साथ आजीवन जुड़ाव रहा।

□ वी. पी. वाडिया: वी.पी. वाडिया (वी.पी. वाडिया नहीं) भी एक महत्वपूर्ण श्रमिक नेता थे, जिन्होंने 1918 में मद्रास लेबर यूनियन की सह-स्थापना की थी। वे 1919 के ILO सम्मेलन में एन.एम. जोशी के साथ उनके तकनीकी सलाहकार के रूप में गए थे, लेकिन जोशी प्राथमिक प्रतिनिधि थे।

□ सी.एफ. एंड्रयूज: सी.एफ. एंड्रयूज एक ब्रिटिश ईसाई मिशनरी और समाज सुधारक थे, जो महात्मा गांधी के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े थे। जबकि वे भारतीय स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के समर्थक थे।

□ जोसेफ बपतिस्ता: जोसेफ बपतिस्ता एक भारतीय राजनीतिज्ञ और स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्हें होम रूल आंदोलन से जुड़े होने के लिए जाना जाता है। वे शुरुआती ट्रेड यूनियन आंदोलन में भी शामिल थे और 1920 में AITUC की स्थापना के समय मौजूद थे।

Q2. राजा छत्रसाल बुंदेला की सफलता की कहानी 'छत्र प्रकाश' निम्नलिखित में से किसने लिखी थी?

- (a) कवि सुंदर
- (b) बिहारीलाल चौबे
- (c) गोरा लाल पुरोहित
- (d) जगज्जरण

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर (c) है।

जीवनी कविता 'छत्र प्रकाश' के रचयिता दरबारी कवि गोरा लाल पुरोहित थे, जिन्हें लाल कवि के नाम से जाना जाता है।

Information Booster

राजा छत्रसाल ने औरंगजेब के खिलाफ विद्रोह किया था।

'छत्र प्रकाश' बुंदेलखंड के इतिहास के लिए एक साहित्यिक स्रोत है।

यह कृति छत्रपति शिवाजी महाराज से छत्रसाल की प्रेरणा का विवरण देती है।

लाल कवि ने इसकी रचना ब्रज भाषा में की थी।

यह पाठ बाजीराव प्रथम के साथ गठबंधन का भी वर्णन करता है।

Additional Knowledge

बिहारीलाल चौबे: जो 'बिहारी सतसई' के लिए प्रसिद्ध हैं।

कवि भूषण: जिन्होंने 'शिवा बावनी' की रचना की।

जगजचरण: जो ऐतिहासिक रूप से इससे जुड़े नहीं हैं।

Q3. 1992 में, ऑस्ट्रेलियाई उच्च न्यायालय ने 1770 से पहले भूमि पर मूल निवासियों के दावों को मान्यता देते हुए एक ऐतिहासिक निर्णय लिया। इस अदालती मामले ने किस कानूनी सिद्धांत को अमान्य घोषित कर दिया?

- (a) मेनिफेस्ट डेस्टिनी
- (b) भारतीय पुनर्गठन अधिनियम
- (c) टेरा नलियस
- (d) बहुसंस्कृतिवाद

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर (c) है।

1992 के ऐतिहासिक मामले माबो बनाम क्वींसलैंड (नंबर 2) में, ऑस्ट्रेलिया के उच्च न्यायालय ने यह स्वीकार करके भूमि कानून को मौलिक रूप से बदल दिया कि स्वदेशी ऑस्ट्रेलियाई लोगों का उनकी पारंपरिक भूमि पर मूल स्वामित्व अधिकार था। ऐसा करते हुए, अदालत ने 18वीं सदी के औपनिवेशिक सिद्धांत 'टेरा नलियस' को कानूनी रूप से पलट दिया, और यह स्वीकार किया कि ब्रिटिश आगमन से पहले महाद्वीप खाली नहीं था।

Information Booster

'टेरा नलियस' एक लैटिन शब्द है जिसका अर्थ है 'ऐसी भूमि जो किसी की नहीं है'।

जब अंग्रेजों ने 1788 में (जेम्स कुक की 1770 की समुद्री यात्रा के बाद) उपनिवेशीकरण शुरू किया, तो उन्होंने स्वदेशी निवासियों के साथ व्यवहार किए बिना पूरे ऑस्ट्रेलियाई भूभाग पर संप्रभुता का दावा करने को सही ठहराने के लिए 'टेरा नलियस' का आह्वान किया।

मेर (मरे आइलैंड) के एक टोरेस स्ट्रेट आइलैंडर एडी माबो ने अपने लोगों द्वारा निरंतर भूमि स्वामित्व साबित करने के लिए 10 साल की कानूनी लड़ाई का नेतृत्व किया।

उच्च न्यायालय के 1992 के फैसले ने पहली बार ऑस्ट्रेलियाई आम कानून में 'मूल स्वामित्व' को मान्यता दी।

निर्णय ने स्थापित किया कि ब्रिटिश बंदोबस्त के बाद भी स्वदेशी भूमि स्वामित्व जीवित रहा, बशर्ते कि स्वदेशी लोगों ने भूमि के साथ निरंतर संबंध बनाए रखा हो।

इस फैसले ने ऑस्ट्रेलियाई सरकार को मूल स्वामित्व दावों के लिए एक कानूनी ढांचा प्रदान करने हेतु मूल शीर्षक अधिनियम 1993 पारित करने के लिए प्रेरित किया।

Additional Knowledge

विकल्प A: 'मेनिफेस्ट डेस्टिनी' 19वीं सदी की एक अमेरिकी सांस्कृतिक मान्यता थी कि बसने वाले पूरे उत्तरी अमेरिका में विस्तार करने के लिए ईश्वर द्वारा नियत थे; ऑस्ट्रेलियाई इतिहास में इसकी कोई कानूनी मान्यता नहीं है।

विकल्प B: 'भारतीय पुनर्गठन अधिनियम' (1934) अमेरिकी संघीय कानून का एक हिस्सा है जिसका उद्देश्य मूल अमेरिकी मामलों पर संघीय नियंत्रण को कम करना है; यह ऑस्ट्रेलियाई कानून से पूरी तरह असंबंधित है।

विकल्प D: 'बहुसंस्कृतिवाद' सांस्कृतिक विविधता को अपनाने वाली एक आधुनिक समाजशास्त्रीय और राजनीतिक नीति है; यह भूमि स्वामित्व या उपनिवेशीकरण के संबंध में कोई कानूनी सिद्धांत नहीं है।

Q4. निम्नलिखित मुगल राजकुमारों में से कौन नूरजहाँ जुंटा का एक प्रभावशाली सदस्य था?

- (a) खुसरो
- (b) परवेज
- (c) खुर्रम
- (d) शहरयार

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर (c) है।

राजकुमार खुर्रम, जो बाद में सम्राट शाहजहाँ के रूप में सिंहासन पर बैठे, जहांगीर के शासनकाल के शुरुआती वर्षों के दौरान शक्तिशाली 'नूरजहाँ गुट' के एक मुख्य और प्रभावशाली सदस्य थे।

Information Booster

'नूरजहाँ जुंटा' एक शक्तिशाली राजनीतिक गुट को संदर्भित करता है जिसने 1611 और 1622 ईस्वी के बीच मुगल प्रशासन को प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया था।

मुख्य सदस्य महारानी नूरजहाँ, उनके पिता एतमाद-उद-दौला, उनके बुद्धिमान भाई आसफ खान और राजकुमार खुर्रम थे। खुर्रम इस गुट से गहराई से जुड़े थे; उनका विवाह मुमताज महल से हुआ था, जो आसफ खान की पुत्री और नूरजहाँ की भतीजी थीं।

इस अवधि के दौरान, खुर्रम को अत्यधिक पसंद किया गया और उन्हें अभूतपूर्व सैन्य कमान और पदोन्नति मिली।

यह गठबंधन 1622 के आसपास टूट गया जब नूरजहाँ ने अपनी पिछली शादी से हुई पुत्री का विवाह राजकुमार शहरयार से कर दिया, और इसके बजाय उन्हें अगले सम्राट के रूप में तैयार करने की कोशिश की।

वफादारी में इस बदलाव ने राजकुमार खुर्रम को जहांगीर और नूरजहाँ के खिलाफ खुले विद्रोह के लिए उकसाया।

Additional Knowledge

खुसरो: जहांगीर के सबसे बड़े पुत्र जिन्होंने शासन के प्रारंभ (1606) में विद्रोह किया था, उन्हें अंधा कर दिया गया था, और अंततः उनकी हत्या कर दी गई थी, कथित तौर पर खुर्रम के आदेश पर।

परवेज: जहांगीर के दूसरे पुत्र; वे अपेक्षाकृत अक्षम थे और सिंहासन सुरक्षित करने से पहले अत्यधिक शराब के सेवन से उनकी मृत्यु हो गई।

शहरयार: जहांगीर के सबसे छोटे पुत्र। गुट के टूटने के *बाद* वे नूरजहाँ के मोहरे और दामाद बने, लेकिन वे मूल, प्रभुत्वशाली चार सदस्यीय गुट का हिस्सा नहीं थे।

Q5. निम्नलिखित में से किस कांग्रेस अधिवेशन ने पहली बार 'मौलिक अधिकार और आर्थिक नीति' पर प्रस्ताव पारित किया?

- (a) लाहौर अधिवेशन (1929)
- (b) कराची अधिवेशन (1931)
- (c) फैजपुर अधिवेशन (1937)
- (d) हरिपुरा अधिवेशन (1938)

Ans.(b)

Sol. सही उत्तर (b) है।

1931 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ऐतिहासिक कराची अधिवेशन अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पहली बार था जब पार्टी ने स्पष्ट रूप से परिभाषित किया था कि जनता के लिए स्वराज का क्या अर्थ होगा। इसने मौलिक अधिकारों और एक राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम की व्यापक सूची को स्पष्ट करने वाला एक ऐतिहासिक, अत्यधिक प्रगतिशील प्रस्ताव पारित किया।

Information Booster

कराची अधिवेशन मार्च 1931 में आयोजित किया गया था, विवादास्पद गांधी-इरविन समझौते और भगत सिंह की दुखद फांसी के तुरंत बाद अत्यधिक तनावपूर्ण माहौल में।

इस सत्र की अध्यक्षता दिग्गज नेता सरदार वल्लभभाई पटेल ने की थी।

मौलिक अधिकारों और आर्थिक नीति पर महत्वपूर्ण प्रस्ताव मुख्य रूप से जवाहरलाल नेहरू द्वारा तैयार किया गया था।

इसने प्रसिद्ध रूप से वाक्, प्रेस, विधानसभा और धर्म की स्वतंत्रता जैसी बुनियादी नागरिक स्वतंत्रता की गारंटी दी, लोकतांत्रिक आदर्शों को राष्ट्रवादी मंच में गहराई से एम्बेड किया।

इसने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार का वादा किया और एक धर्मनिरपेक्ष राज्य की वकालत करते हुए धार्मिक मामलों में राज्य की तटस्थता की स्पष्ट रूप से घोषणा की।

आर्थिक घटक कट्टरपंथी था, जिसमें श्रमिकों के लिए जीवन निर्वाह मजदूरी, भू-राजस्व में पर्याप्त कमी और प्रमुख उद्योगों और परिवहन पर राज्य के नियंत्रण की वकालत की गई थी।

इस प्रस्ताव ने आवश्यक वैचारिक नींव रखी जो बाद में स्वतंत्र भारत के संविधान के निर्माण को भारी रूप से प्रभावित करेगी।

Additional Knowledge

लाहौर अधिवेशन (1929) 'पूर्ण स्वराज' (पूर्ण स्वतंत्रता) की मांग वाले महत्वपूर्ण प्रस्ताव को पारित करने के लिए प्रसिद्ध है, न कि विशिष्ट अधिकार प्रस्ताव के लिए।

फैजपुर अधिवेशन (1937) कृषि कार्यक्रमों पर जोर देते हुए एक ग्रामीण गांव में आयोजित होने वाले पहले कांग्रेस अधिवेशन के लिए उल्लेखनीय था, लेकिन यह मौलिक अधिकार दस्तावेज़ का प्रवर्तक नहीं था।

सुभाष चंद्र बोस की अध्यक्षता में हरिपुरा अधिवेशन (1938) ने औद्योगीकरण पर ध्यान केंद्रित करते हुए नेहरू के तहत राष्ट्रीय योजना समिति की स्थापना देखी।

Q6. अभिकथन (A): पुर्तगाली समुद्र के रास्ते भारत पहुँचने वाले पहले यूरोपीय थे, लेकिन वे 17वीं शताब्दी के मध्य तक अन्य यूरोपीय शक्तियों के हाथों अपना प्रभुत्व खोने वाले पहले भी थे।

तर्क (R): ब्राजील की खोज ने पुर्तगालियों का ध्यान पश्चिम की ओर मोड़ दिया, और उनकी धार्मिक असहिष्णुता/जबरन धर्मांतरण ने स्थानीय भारतीय शासकों को उनसे अलग कर दिया।

(a) दोनों (A) और (R) सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(b) दोनों (A) और (R) सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।

(d) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर है (a)।

अभिकथन और तर्क दोनों ऐतिहासिक रूप से सटीक हैं, और तर्क सफलतापूर्वक अभिकथन की व्याख्या करता है। हिंद महासागर में पुर्तगाली औपनिवेशिक एकाधिकार भू-राजनीतिक बदलावों और गहराई से त्रुटिपूर्ण आंतरिक नीतियों के संयोजन के कारण तेजी से ढह गया।

Information Booster

पुर्तगालियों ने 1498 में वास्को डी गामा के कालीकट आगमन के बाद अपना प्रारंभिक समुद्री प्रभुत्व स्थापित किया, और एक सदी से भी अधिक समय तक लाभदायक मसाला व्यापार को नियंत्रित किया।

17वीं शताब्दी के मध्य तक उनके तीव्र पतन पर ब्राजील की आकर्षक खोज का गहरा प्रभाव पड़ा, जिसने लिस्बन के रणनीतिक और आर्थिक ध्यान को हिंद महासागर से हटाकर अमेरिका की ओर स्थानांतरित कर दिया।

धार्मिक असहिष्णुता की उनकी आक्रामक नीतियों, जिसका सटीक उदाहरण 1560 में स्थापित क्रूर 'गोवा इन्क्रिजिशन' है, ने शक्तिशाली स्वदेशी शासकों और स्थानीय आबादी को गंभीर रूप से अलग-थलग कर दिया।

बाद की व्यावहारिक ब्रिटिश और डच कंपनियों के विपरीत, पुर्तगाली राज्य ने अपने वाणिज्यिक उद्यमों के साथ आक्रामक ईसाई धर्मप्रचार को सक्रिय रूप से जोड़ दिया।

पुर्तगाली प्रशासन के भीतर व्यापक भ्रष्टाचार, अनियंत्रित समुद्री डकैती और उनकी दमनकारी 'कार्टाज़' (नौसेना पास) प्रणाली ने व्यापक स्वदेशी शत्रुता को जन्म दिया।

वे 1600 के दशक में अच्छी तरह से वित्त पोषित और अत्यधिक संगठित डच (VOC) और इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनियों के उदय के कारण आर्थिक और सैन्य दोनों रूप से पीछे रह गए।

Additional Knowledge

विकल्प B गलत है क्योंकि ब्राजील की ओर संरचनात्मक बदलाव और धार्मिक अलगाव को इतिहासकारों द्वारा भारत में उनके तेजी से होते साम्राज्यिक पतन के सीधे कारण कारकों (तर्क) के रूप में सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त है।

विकल्प C एक गलत विकल्प है क्योंकि तर्क पुर्तगाली भेद्यता के बहुआयामी कारणों को दर्शाने वाला पूरी तरह से सटीक ऐतिहासिक कथन है।

विकल्प D गलत है क्योंकि अभिकथन सही ढंग से पुर्तगालियों को भारत में यूरोपीय नौसैनिक विस्तार के अग्रदूत और गंभीर क्षेत्रीय एवं वाणिज्यिक संकुचन का शिकार होने वाले सबसे पहले के रूप में पहचानता है।

Q7. पुनर्जागरण के दौरान महिलाओं की आकांक्षाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. कुलीन परिवारों की महिलाओं को सार्वजनिक जीवन से पूरी तरह से बाहर रखा गया था और उन्हें केवल घरों के रखवाले के रूप में देखा जाता था।

एक विनीशियन लेखिका कैसांड्रा फेडेले को ग्रीक और लैटिन में उनकी दक्षता के लिए मनाया जाता था और उन्होंने पडुआ विश्वविद्यालय में भाषण दिए थे।

मंटुआ की मार्केसा, इसाबेला डी'एस्टे ने अपने पति की अनुपस्थिति में बौद्धिक प्रतिभा और दृढ़ विश्वास का प्रदर्शन करते हुए राज्य पर शासन किया।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा सही है?

(a) केवल I और II

(b) केवल II और III

(c) केवल I और III

(d) I, II, और III

Ans.(d)

Sol. सही उत्तर (d) है।

पुनर्जागरण के दौरान, महिलाओं की भूमिकाएँ अत्यधिक द्विभाजित थीं। जबकि व्यापक सामाजिक मानदंड ने अभिजात वर्ग और व्यापारिक महिलाओं को घरेलू क्षेत्रों तक भारी रूप से सीमित कर दिया था, कुछ असाधारण महिलाओं ने शास्त्रीय शिक्षा और राजनीतिक नेतृत्व के माध्यम से इन सीमाओं को तोड़ दिया, जिससे सभी प्रदान किए गए कथन उस युग की जटिल लैंगिक गतिशीलता के ऐतिहासिक रूप से सटीक प्रतिनिधित्व बन गए।

Information Booster

कथन I प्रमुख पितृसत्तात्मक वास्तविकता को दर्शाता है: अधिकांश मानवतावादी विद्वानों का मानना था कि शिक्षा नागरिक कर्तव्य की तैयारी करने वाले पुरुषों के लिए थी। कुलीन महिलाएं आमतौर पर विशाल सम्पदा के प्रबंधन, नौकरों की देखरेख और औपचारिक सार्वजनिक भूमिकाओं के बिना बच्चों की परवरिश तक सीमित थीं।

कथन II एक अपवाद पर प्रकाश डालता है: कैसांड्रा फेडेले (1465-1558) एक असाधारण विनीशियन मानवतावादी लेखिका थीं। सामाजिक बाधाओं के बावजूद, उन्होंने ग्रीक और लैटिन में महारत हासिल की और अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की, और प्रसिद्ध रूप से पडुआ विश्वविद्यालय में सार्वजनिक भाषण दिया।

कथन III राजनीतिक अभिकरण को प्रदर्शित करता है: इसाबेला डी'एस्टे (1474-1539) को अक्सर 'पुनर्जागरण की प्रथम महिला' कहा जाता है। उन्होंने अपने पति की अनुपस्थिति के दौरान मंटुआ के रीजेंट के रूप में कार्य किया और कला की एक प्रमुख संरक्षक बन गईं, जो अपार राजनीतिक और सांस्कृतिक सम्मान प्राप्त करती थीं।

इन कथनों का संयोजन महिलाओं के लिए 'पुनर्जागरण विरोधाभास' को स्पष्ट करता है: बौद्धिक पुनर्जन्म का एक काल जिसने महिलाओं के लिए सीमित प्रणालीगत मुक्ति की पेशकश की, फिर भी कभी-कभी व्यक्तिगत प्रतिभा को फलने-फूलने की अनुमति दी।

Additional Knowledge

विकल्प A गलत है क्योंकि यह अनुचित रूप से मंटुआ में इसाबेला डी'एस्टे के अच्छी तरह से प्रलेखित राजनीतिक और सांस्कृतिक शासन को बाहर करता है।

विकल्प B गलत है क्योंकि, फेडेले और डी'एस्टे की उपलब्धियों के बावजूद, यह व्यापक ऐतिहासिक सत्य (कथन I) को अनदेखा करता है कि कुलीन महिलाओं का विशाल बहुमत वास्तव में सख्ती से घरेलू प्रबंधन तक ही सीमित था।

विकल्प C गलत है क्योंकि यह कैसांड्रा फेडेले के महत्वपूर्ण मानवतावादी योगदान को अनदेखा करता है, जो पुनर्जागरण में महिला बौद्धिक आकांक्षा का एक प्रमुख उदाहरण है।

Q8. निम्नलिखित में से कौन मौर्य वंश का अंतिम शासक था?

- (a) अशोक
- (b) चंद्रगुप्त
- (c) बृहद्रथ
- (d) कालाशोक

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर है (c)।

शक्तिशाली मौर्य साम्राज्य, जिसने एक बार लगभग पूरे भारतीय उपमहाद्वीप को एक अत्यधिक केंद्रीकृत प्रशासन के तहत एकीकृत किया था, को अशोक की मृत्यु के बाद एक स्थिर और अपरिवर्तनीय पतन का सामना करना पड़ा। यह स्थिर विघटन 185 ईसा पूर्व में बृहद्रथ के शासनकाल के दौरान समाप्त हुआ, जो शानदार मौर्य राजवंश का पूर्ण अंतिम शासक होने का ऐतिहासिक गौरव रखता है।

Information Booster

अशोक की मृत्यु के बाद, साम्राज्य कमजोर शासकों, प्रांतीय विद्रोहों और बैक्ट्रियन यूनानियों द्वारा विनाशकारी विदेशी आक्रमणों के उत्तराधिकार से त्रस्त था।

बृहद्रथ एक अत्यधिक अप्रभावी और कमजोर सम्राट साबित हुए, जो विशाल शाही क्षेत्रों के तेजी से विखंडन को रोकने में पूरी तरह से असमर्थ थे।

बाणभट्ट के हर्षचरित में विस्तृत विवरण के अनुसार, बृहद्रथ की एक सार्वजनिक सैन्य परेड के दौरान हत्या कर दी गई थी।

हत्यारा उनका अपना भरोसेमंद कमांडर-इन-चीफ (सेनापति), महत्वाकांक्षी ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र शुंग था।

इस हिंसक तख्तापलट ने मौर्य राजवंश को पूरी तरह से बुझा दिया और तुरंत मगध में आक्रामक रूप से रूढ़िवादी शुंग राजवंश की स्थापना की।

मौर्यों के पतन ने भारत के पहले महान शाही एकीकरण के निश्चित अंत को चिह्नित किया, जिससे क्षेत्रीय राज्यों की एक लंबी अवधि शुरू हुई।

Additional Knowledge

अशोक: 3रे और सबसे प्रसिद्ध मौर्य सम्राट, जो अपनी धम्म की नीति और स्मारकीय आदेशों के लिए प्रसिद्ध हैं, जिनके अधीन साम्राज्य अपने पूर्ण चरमोत्कर्ष पर पहुंचा।

चंद्रगुप्त: मौर्य राजवंश के शानदार और रणनीतिक रूप से चतुर संस्थापक, जिन्होंने चाणक्य की मदद से नंदों को उखाड़ फेंका और साम्राज्य की स्थापना की।

कालाशोक: पहले के शिशुनाग वंश के एक महत्वपूर्ण शासक, जो वैशाली में 2री बौद्ध संगीति बुलाने के लिए प्रसिद्ध हैं, जो मौर्य काल से पूरी तरह से पहले के हैं।

Q9. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन कहा गया है?

अभिकथन (A): चार्टर अधिनियम 1813 ने ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापार एकाधिकार को समाप्त कर दिया।

कारण (R): ब्रिटिश संसद भारत के व्यापार को सभी ब्रिटिश व्यापारियों के लिए खोलना चाहती थी।

- (a) (a) A और R दोनों सत्य हैं, और R सही स्पष्टीकरण है।
(b) A और R दोनों सत्य हैं, लेकिन R सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(c) A सत्य है, लेकिन R असत्य है।
(d) A असत्य है, लेकिन R सत्य है।

Ans.(a)

Sol. Ans:- (a) A और R दोनों सत्य हैं, तथा R सही व्याख्या है।

□ 1813 का चार्टर अधिनियम भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी और ब्रिटिश व्यापार के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था।

1. व्यापार एकाधिकार का अंत:

ईस्ट इंडिया कंपनी ने 17वीं शताब्दी से भारत के साथ व्यापार एकाधिकार का आनंद लिया था।

हालाँकि, 19वीं शताब्दी की शुरुआत में, निजी ब्रिटिश व्यापारी और उद्योगपति भारतीय व्यापार को खोलने के लिए संसद पर दबाव डाल रहे थे।

परिणामस्वरूप, 1813 के चार्टर अधिनियम ने भारत में कंपनी के व्यापार एकाधिकार को समाप्त कर दिया, सिवाय चाय के व्यापार और चीन के साथ व्यापार को छोड़कर, जो कंपनी के नियंत्रण में जारी रहा।

2. संसद की मंशा:

ब्रिटिश संसद मुक्त व्यापार को बढ़ावा देना चाहती थी और भारत को ब्रिटेन की बढ़ती पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में एकीकृत करना चाहती थी। ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति ने भारत से कच्चे माल की मांग और ब्रिटिश माल बेचने के लिए बाजार पैदा कर दिए थे। संसद ने इस दबाव का जवाब सभी ब्रिटिश नागरिकों के लिए भारतीय व्यापार खोलकर दिया, जिससे कंपनी के विशेष वाणिज्यिक विशेषाधिकार समाप्त हो गए।

Q10. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. विजयनगर के सबसे शानदार मंदिरों में से एक हज़ारा राम मंदिर था
2. हज़ारा राम मंदिर का उपयोग शायद केवल राजा और उनके परिवार द्वारा किया जाना था
3. मंदिर की आंतरिक दीवारों पर गढ़े हुए पैनलों में रामायण के दृश्य शामिल हैं
4. मंदिर परिसर की मुख्य विशेषता रथ सड़कें हैं

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनें:

- (a) 1, 2 और 3
(b) 1, 3 और 4
(c) 2, 3 और 4

(d) 1, 2, 3 और 4

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर है (a)

हज़ारा राम मंदिर विजयनगर 'राँयल सेंटर' की उत्कृष्ट कृति है। जबकि कथन 1, 2, और 3 इसके स्थान, विशिष्टता और विषयगत आधार-राहत का सटीक वर्णन करते हैं, कथन 4 गलत है क्योंकि 'रथ सड़कें' (रथ वीथिस) विट्टल और विरुपाक्ष जैसे सार्वजनिक मंदिरों की विशेषता थीं, न कि इस निजी शाही मंदिर की।

Information Booster

मंदिर का निर्माण 15वीं शताब्दी की शुरुआत में देव राय I के शासनकाल के दौरान किया गया था।

'हज़ारा राम' शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'एक हजार राम'।

बाहरी दीवारों में घोड़ों, हाथियों, नर्तकियों और सैनिकों के जुलूसों को दर्शाया गया है।

आंतरिक काले पत्थर के खंभे बड़े पैमाने पर नक्काशीदार और पॉलिश किए गए हैं।

रामायण पैनलों को दीवारों पर कथा रजिस्टर में व्यवस्थित किया गया है।

Additional Knowledge

रथ सड़कें: ये चौड़ी सड़कें प्रमुख मंदिरों के प्रवेश द्वार तक जाती थीं और वार्षिक रथोत्सव (रथ उत्सव) की मेजबानी करती थीं।

विट्टल मंदिर: अपने पत्थर के रथ और संगीत स्तंभों के लिए प्रसिद्ध, जो शैली के शिखर का प्रतिनिधित्व करता है।

विशिष्टता: राँयल सेंटर में इसका स्थान पुष्टि करता है कि यह राय (राजाओं) के लिए एक महल मंदिर था।

Q11. प्रसिद्ध हड़प्पा स्थल कालीबंगा किस नदी घाटी में स्थित है?

(a) घग्गर

(b) रावी

(c) सतलज

(d) व्यास

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर है (a)।

सिंधु घाटी सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण और खुलासा करने वाली प्रांतीय राजधानियों में से एक, कालीबंगा, आधुनिक राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में रणनीतिक रूप से स्थित है। यह प्राचीन घग्गर नदी के सूखे तल पर स्थित है, जिसे इतिहासकार और पुरातत्वविद् व्यापक रूप से वैदिक साहित्य में बड़े पैमाने पर उल्लिखित पवित्र, अब सूखी हुई, सरस्वती नदी के रूप में पहचानते हैं।

Information Booster

कालीबंगा का स्थल प्रमुख रूप से पूर्व-हड़प्पा (प्रारंभिक हड़प्पा) और परिपक्व हड़प्पा सांस्कृतिक चरणों दोनों के निरंतर साक्ष्य प्रदर्शित करता है।

यह सावधानीपूर्वक जुते हुए कृषि क्षेत्र का दुनिया का सबसे पहला ज्ञात पुरातात्विक साक्ष्य प्रदान करने के लिए विशिष्ट रूप से मनाया जाता है।

स्थल पर विशिष्ट अग्नि वेदियों की खोज स्थानीयकृत अनुष्ठानिक बलिदानों या उन्नत अग्नि पूजा की प्रथा का दृढ़ता से सुझाव देती है।

अधिकांश अन्य प्रमुख हड़प्पा शहरों के विपरीत, कालीबंगा में विशिष्ट रूप से इसके गढ़ और निचले शहर दोनों को विशाल मिट्टी-ईंट की दीवारों से भारी किलेबंदी की गई थी।

पुरातत्वविदों ने यहां प्रारंभिक भूकंप गतिविधि के आकर्षक साक्ष्य उजागर किए हैं, जिसने स्थल के अंतिम पतन में योगदान दिया होगा।

'कालीबंगा' नाम का अर्थ 'काली चूड़ियाँ' है, जो सीधे तौर पर व्यापक खुदाई के दौरान खोजी गई टेराकोटा चूड़ियों की भारी मात्रा को संदर्भित करता है।

Additional Knowledge

रावी: रावी नदी पंजाब से होकर बहती है और सिंधु घाटी सभ्यता में खोजा गया सबसे पहला स्थल हड़प्पा से प्रसिद्ध रूप से जुड़ी है।

सतलज: आधुनिक पंजाब में रोपड़ (रूपनगर) के महत्वपूर्ण हड़प्पा स्थल की मेजबानी के लिए सतलज नदी घाटी ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है।

व्यास: जबकि व्यापक पंजाब क्षेत्र में एक प्रमुख नदी, व्यास कालीबंगा के प्रमुख हड़प्पा शहरी केंद्र से जुड़ा प्राथमिक भौगोलिक स्थान नहीं है।

Q12. मुगल कृषि समाज में महिलाओं की भूमिका के संबंध में, निम्नलिखित में से कौन सा सत्य है?

1. किसान परिवारों में महिलाओं के लिए "घर" और पुरुषों के लिए "दुनिया" का सख्त अलगाव था।
2. बंगाल में रजस्वला महिलाओं को पान के बगीचों में प्रवेश करने की मनाही थी।
3. कई ग्रामीण समुदायों में, विवाह के लिए वधु-मूल्य के भुगतान की आवश्यकता होती थी।
4. ज़मींदार वर्ग की महिलाएँ, जिनमें विधवाएँ भी शामिल थीं, ज़मींदारी विरासत में प्राप्त कर सकती थीं और बेच सकती थीं।

- (a) केवल 1 और 2
(b) केवल 1, 3 और 4
(c) केवल 2, 3 और 4
(d) उपरोक्त सभी

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर (C) है।

कथन 1 गलत है क्योंकि किसान परिवारों में, 'घर' और 'काम' के बीच की सीमा लचीली थी। महिलाएँ उत्पादन प्रक्रिया का अभिन्न अंग थीं, जो पुरुषों के साथ बुवाई, निराई और मड़ाई जैसे कार्य करती थीं। सख्त 'पर्दा' या अलगाव काफी हद तक शहरी या कुलीन वर्ग की घटना थी।

Information Booster

किसान महिलाएँ आवश्यक श्रम इकाइयाँ थीं; पुरुष खेत जोतते थे जबकि महिलाएँ कटाई के बाद की गतिविधियों में लगी रहती थीं।

कारीगर परिवारों (जैसे बुनकर) में, महिलाएँ धागे की मुख्य कतैयाँ थीं, जो सीधे अर्थव्यवस्था में योगदान देती थीं।

कुरीतियाँ मौजूद थीं, जैसे कि बंगाल में जहाँ महिलाओं को मासिक धर्म के दौरान पान (Betel-leaf) के बगीचों से दूर रखा जाता था।

निचली जातियों/वर्गों में 'वधु-मूल्य' (दहेज का उल्टा) आम था, जो श्रम संपत्ति के रूप में महिला के मूल्य को स्वीकार करता था।

मुगल कानूनी प्रणाली और स्थानीय रीति-रिवाजों ने अक्सर कुलीन महिलाओं के संपत्ति अधिकारों को मान्यता दी।

राजस्थान और महाराष्ट्र के ऐतिहासिक रिकॉर्ड दिखाते हैं कि महिलाएँ (विधवाएँ) भूमि अधिकारों के लिए राज्य में याचिकाएँ दायर करती थीं।

महिलाएँ अपने अधिकार में 'ज़मींदार' के रूप में कार्य कर सकती थीं, संपत्ति का प्रबंधन कर सकती थीं और राजस्व एकत्र कर सकती थीं।

बच्चे के जन्म के दौरान उनकी उच्च मृत्यु दर के कारण जनसांख्यिकीय असंतुलन पैदा हुआ जहाँ महिलाओं को भागीदारों के रूप में अत्यधिक महत्व दिया जाता था।

Additional Knowledge

अलगाव का मिथक: जहाँ कुलीन महिलाएँ ज़नाना में रहती थीं, वहीं ग्रामीण महिलाएँ बाज़ारों और खेतों में दिखाई देती थीं।
ज़मींदारी अधिकार: 'बिक्री विलेख' (Sale Deeds) जैसे दस्तावेजों पर अक्सर महिला विक्रेताओं के नाम होते हैं, जो भूमि बाज़ारों में उनकी एजेंसी को साबित करते हैं।

सामाजिक नियंत्रण: उनकी आर्थिक भूमिका के बावजूद, महिलाओं को बेवफाई और सामाजिक व्यवहार के संबंध में सख्त पितृसत्तात्मक नियंत्रण का सामना करना पड़ता था।

Q13. नीचे दिए गए दो कथनों में से एक कथन (A) है और दूसरा कारण (R) है -

कथन (A): नूरजहाँ से विवाह के कारण जहाँगीर प्रशासन के प्रति उदासीन हो गया।

तर्क (R): 1611-22 के दौरान नूरजहाँ ने अपनी एक अलग पार्टी (जुंटा) बनाई और बहुत शक्तिशाली बन गई।

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।

(d) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है।

Ans.(d)

विस्तृत समाधान (Detailed Solution)

कथन (A) गलत है: यह एक प्रचलित ऐतिहासिक धारणा है कि 1611 में नूरजहाँ से विवाह करने के बाद जहाँगीर पूरी तरह से प्रशासन के प्रति उदासीन हो गया था, लेकिन समकालीन रिकॉर्ड और आधुनिक इतिहासकार इस बात का खंडन करते हैं। जहाँगीर अंतिम निर्णय लेने वाला सर्वोच्च अधिकारी बना रहा। वह नियमित रूप से दरबार लगाता था, फरमान जारी करता था और सैन्य अभियानों का नेतृत्व भी करता था। यद्यपि बाद के वर्षों में स्वास्थ्य खराब होने के कारण उसकी सक्रियता कम हुई, लेकिन उसने कभी भी प्रशासनिक जिम्मेदारियों का पूरी तरह त्याग नहीं किया।

कारण (R) सही है: 1611 से 1622 के बीच के काल को इतिहासकार (जैसे बेनी प्रसाद) अक्सर "नूरजहाँ जुंटा" (Nur Jahan Junta) के नाम से संबोधित करते हैं। यह एक शक्तिशाली गुट था जिसमें नूरजहाँ, उसके पिता एतमाद-उद-दौला, उसका भाई आसफ खान और शहजादा खुर्रम (भावी शाहजहाँ) शामिल थे। इस गुट का मुगल दरबार पर गहरा प्रभाव था और नियुक्तियों व पदोन्नति में इनकी प्रमुख भूमिका रहती थी।

इन्फॉर्मेशन बूस्टर (Information Booster):

"जुंटा" सिद्धांत के अनुसार, लगभग एक दशक तक सम्राट तक पहुँचने या पदोन्नति पाने के लिए इस गुट की सहमति आवश्यक थी। नूरजहाँ मध्यकालीन भारत की एकमात्र ऐसी रानी थी जिसके नाम के सिक्के ढाले गए थे और जिसने शाही फरमान (हुक्म) जारी किए थे। यह उस युग की किसी भी महिला के लिए राजनीतिक शक्ति का एक अभूतपूर्व उदाहरण था।

अतिरिक्त ज्ञान (Additional Knowledge):

जंजीर-ए-अदल: अपनी न्यायप्रियता सिद्ध करने के लिए जहाँगीर ने आगरा के किले में "न्याय की जंजीर" लगवाई थी, जिसे कोई भी पीड़ित व्यक्ति सम्राट से सीधे न्याय की गुहार लगाने के लिए खींच सकता था।

बारह अध्यादेश (दस्तूर-उल-अमल): शासन के शुरुआती वर्षों में जहाँगीर ने जनहित के लिए 12 नियम जारी किए थे, जिनमें जकात (अवैध कर) की समाप्ति, सड़कों के किनारे सराय और मस्जिदों का निर्माण, और शराब व तंबाकू की बिक्री पर रोक शामिल थी।

इतिहासलेखन में बदलाव: आधुनिक इतिहासकार अब जहाँगीर और नूरजहाँ के संबंधों को एक "राजनीतिक साझेदारी" के रूप में देखते हैं। जहाँ जहाँगीर कला, चित्रकला और विस्तार पर ध्यान देता था, वहीं नूरजहाँ एक कुशल प्रशासक के रूप में दरबारी गुटबाजी को नियंत्रित करने में उसकी सहायता करती थी।

Q14. चीन के आधुनिकीकरण के मार्ग के संबंध में निम्नलिखित प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:

1. चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CCP) की स्थापना
2. मई फोर्थ आंदोलन, बीजिंग में आयोजित एक क्रोधित प्रदर्शन
3. शानक्सी के लिए लंबा मार्च
4. सन यात-सेन के तहत गणराज्य की स्थापना

- (a) 4, 2, 1, 3
(b) 2, 4, 1, 3
(c) 4, 1, 2, 3
(d) 1, 4, 2, 3

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर है (a)।

चीन के आधुनिक इतिहास को समझने के लिए क्रांतिकारी बदलावों के क्रम को समझना आवश्यक है। किंग राजवंश के पतन से गणराज्य (1912) का उदय हुआ, उसके बाद मई फोर्थ आंदोलन (1919) का सांस्कृतिक जागरण हुआ, जिसने कम्युनिस्ट पार्टी (1921) की स्थापना को प्रेरित किया, जिससे अंततः कम्युनिस्टों की राजनीतिक वापसी हुई जिसे लॉन्ग मार्च (1934-35) के रूप में जाना जाता है।

Information Booster

4. गणराज्य की स्थापना (1912): 1911 की जिन्हाई क्रांति के बाद, किंग राजवंश का पतन हो गया। सन यात-सेन का जनवरी 1912 में नए चीन गणराज्य के अंतिम राष्ट्रपति के रूप में उद्घाटन किया गया था।

2. मई फोर्थ आंदोलन (1919): वर्साय की संधि की अनुचित शर्तों से प्रेरित होकर, छात्रों ने 4 मई, 1919 को बीजिंग में मार्च किया। इसने एक व्यापक साम्राज्यवाद-विरोधी, सांस्कृतिक और राजनीतिक आंदोलन छेड़ दिया।

1. CCP की स्थापना (1921): मई फोर्थ आंदोलन और रूसी बोलशेविक क्रांति से प्रेरित होकर, चेन डक्सिउ और ली डाझाओ जैसे बौद्धिक नेताओं ने जुलाई 1921 में शंघाई में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की।

3. लॉन्ग मार्च (1934-1935): चियांग काई-शेक की राष्ट्रवादी ताकतों द्वारा विनाश का सामना करते हुए, कम्युनिस्ट रेड आर्मी ने जियांगशी से शानक्सी क्षेत्र के बीहड़ इलाके में क्रूर, साल भर चलने वाली, 6,000 मील की वापसी की, जिससे माओत्से तुंग का निर्विवाद नेतृत्व सुरक्षित हुआ।

यह कालानुक्रमिक क्रम एक साम्राज्य से राष्ट्रवादी और कम्युनिस्ट विचारधाराओं के बीच युद्ध के मैदान में चीन के अराजक संक्रमण को सटीक रूप से मैप करता है।

Additional Knowledge

विकल्प B गलत है क्योंकि यह गणराज्य (1912) की स्थापना से पहले मई फोर्थ आंदोलन (1919) को रखता है।

विकल्प C गलत है क्योंकि यह गलत तरीके से दावा करता है कि CCP (1921) की स्थापना मई फोर्थ आंदोलन (1919) से पहले हुई थी, जबकि बाद वाले ने पूर्व को काफी प्रभावित किया था।

विकल्प D गलत है क्योंकि यह CCP की स्थापना को सबसे प्रारंभिक घटना के रूप में रखता है, जो 1911 की क्रांति और 1919 के विरोध प्रदर्शनों की कालानुक्रमिक वास्तविकता की अनदेखी करता है।

Q15. निम्नलिखित में से कौन भारतीय राष्ट्रीय सेना के नेता नहीं हैं?

- (a) रासबिहारी बोस और कैप्टन मोहन सिंह
- (b) कैप्टन मोहन सिंह और सुभाष चंद्र बोस
- (c) प्रीतम सिंह और कैप्टन मोहन सिंह
- (d) पृथ्वी सिंह आज़ाद और फणीन्द्रनाथ घोष

Ans.(d)

Sol. रास बिहारी बोस और कैप्टन मोहन सिंह: दोनों ही INA के गठन में महत्वपूर्ण प्रारंभिक व्यक्ति थे। रास बिहारी बोस ने INA को इसके शुरुआती चरणों में शुरू करने में मदद की और कैप्टन मोहन सिंह ने सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व संभालने से पहले इसे संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कैप्टन मोहन सिंह और सुभाष चंद्र बोस: दोनों ही महत्वपूर्ण नेता थे। कैप्टन मोहन सिंह के बाद सुभाष चंद्र बोस ने INA के नेता के रूप में पदभार संभाला।

प्रीतम सिंह और कैप्टन मोहन सिंह: प्रीतम सिंह INA का हिस्सा थे।

Q16. निम्नलिखित में से किसने दिल्ली सल्तनत में 1296-1316 ई. के बीच शासन किया था?

- (a) अलाउद्दीन खिलजी
- (b) बलबन
- (c) इल्तुतमिश
- (d) मुहम्मद बिन तुगलक

Ans.(a)

Sol. अलाउद्दीन खिलजी ने 1296 से 1316 ई. तक शासन किया। वह खिलजी वंश के सबसे प्रमुख शासकों में से एक थे और उन्होंने अपने शासनकाल के दौरान दिल्ली सल्तनत का काफी विस्तार किया। अपनी सैन्य शक्ति और प्रशासनिक सुधारों के लिए जाने जाने वाले, अलाउद्दीन खिलजी ने उत्तर भारत के बड़े हिस्से पर अपनी शक्ति को मजबूत किया और यहां तक कि साम्राज्य की पहुंच को दक्कन क्षेत्र तक बढ़ाया। उनके शासनकाल को क्षेत्रीय विस्तार और आंतरिक सुधारों, विशेष रूप से राजस्व संग्रह और बाजार विनियमन के क्षेत्रों में चिह्नित किया गया है।

Information Booster:

अलाउद्दीन खिलजी, जिसके शासन में दिल्ली सल्तनत क्षेत्रीय विस्तार के मामले में अपने चरम पर पहुँची, 1296 में अपने चाचा और ससुर सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी की हत्या के बाद सत्ता में आया। उसके शासनकाल में गुजरात, दक्कन और राजपूत राज्यों पर सफल आक्रमण सहित प्रमुख सैन्य अभियान हुए। उसके प्रशासनिक परिवर्तनों में बाज़ार सुधार, कीमतों पर नियंत्रण और केंद्रीकृत कराधान प्रणाली की शुरुआत शामिल थी। वह मंगोल आक्रमणों के प्रभावी दमन के लिए भी जाना जाता था।

Additional Information:

(b) बलबन: बलबन दिल्ली सल्तनत का शासक था जिसने 1266 से 1287 तक शासन किया। वह मामलुक (गुलाम) वंश से संबंधित था और उसे दिल्ली सल्तनत को मजबूत करने और एक मजबूत केंद्रीय प्रशासन की स्थापना के लिए जाना जाता है।

(c) इल्तुतमिश: इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत का एक महत्वपूर्ण शासक था जिसने 1211 से 1236 ई. तक शासन किया। उसने दिल्ली सल्तनत को मजबूत करने, इसकी वैधता स्थापित करने और बगदाद के खलीफा से मान्यता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(d) मुहम्मद-बिन तुगलक: मुहम्मद-बिन तुगलक ने 1325 से 1351 ई. तक शासन किया। वह अपनी महत्वाकांक्षी लेकिन अक्सर विनाशकारी नीतियों के लिए जाना जाता है, जिसमें दिल्ली से दौलताबाद में राजधानी को स्थानांतरित करना

शामिल है। हालाँकि, उन्होंने 1296-1316 ई. के बाद शासन किया, जो उन्हें इस समय सीमा के लिए एक गलत विकल्प बनाता है।

Q17. सूची - I (प्राचीन बंदरगाह) को सूची - II (स्थान/क्षेत्र) के साथ सुमेलित करें।

- | सूची - I | सूची - II |
|----------------|-----------------|
| A. बेरीगाजा | I. बंगाल तट |
| B. मुज़िरिस | II. गुजरात तट |
| C. ताम्रलिप्ति | III. मालाबार तट |
| D. अरिकामेडु | IV. कोरोमंडल तट |

- (A). A-II, B-IV, C-I, D-III
(b) A-I, B-II, C-III, D-IV
(c) A-II, B-III, C-I, D-IV
(d) A-III, B-II, C-IV, D-I

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर (c) है।

प्राचीन भारत का समुद्री व्यापार उपमहाद्वीप की तटरेखा पर रणनीतिक रूप से स्थित समृद्ध बंदरगाह शहरों के नेटवर्क द्वारा सुगम बनाया गया था। ये बंदरगाह भारतीय व्यापारियों को वैश्विक व्यापार नेटवर्क से जोड़ते थे, जो पश्चिम में रोमन साम्राज्य से लेकर पूर्व में दक्षिण पूर्व एशिया तक फैले हुए थे।

Information Booster:

- ☑ बेरीगाजा, जिसे आधुनिक भरूच कहा जाता है, गुजरात तट पर स्थित एक प्रमुख प्राचीन बंदरगाह था, जो पश्चिमी भारत में रोमन व्यापार के लिए एक विशाल केंद्र के रूप में कार्यरत था।
- ☑ मुज़िरिस मालाबार तट (केरल) पर स्थित एक पौराणिक प्राचीन बंदरगाह था, जो रोमन दुनिया को काली मिर्च और मसालों के निर्यात के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध था।
- ☑ ताम्रलिप्ति (तामलुक) बंगाल तट पर स्थित एक आवश्यक बंदरगाह था, जो दक्षिण पूर्व एशिया और चीन के साथ व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए प्राथमिक पूर्वी द्वार के रूप में कार्य करता था।
- ☑ पांडिचेरी के पास कोरोमंडल तट पर स्थित अरिकामेडु एक प्रमुख भारत-रोमन व्यापारिक केंद्र था जो अपने मनका निर्माण और आयातित रोमन एम्फोरा के लिए जाना जाता था।
- ☑ 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' एक महत्वपूर्ण ग्रीक ग्रंथ है जो इन बंदरगाहों और उनकी व्यापारिक वस्तुओं का विशद वर्णन प्रदान करता है।
- ☑ इन तटीय केंद्रों ने प्राचीन भारत में महत्वपूर्ण शहरीकरण, मुद्रिकृत अर्थव्यवस्थाओं और धनी व्यापारी संघों के उत्कर्ष को जन्म दिया।

Additional Information:

- ❑ विकल्प A गलत है क्योंकि यह गलत तरीके से मुज़िरिस को कोरोमंडल तट और अरिकामेडु को मालाबार तट के साथ जोड़ता है, जिससे पूर्वी और पश्चिमी समुद्री तटों के बीच भ्रम पैदा होता है।
- ❑ विकल्प B बेरीगाजा को बंगाल और मुज़िरिस को गुजरात से गलत सुमेलित करता है, जो प्राचीन व्यापार के तटीय भूगोल की पूरी तरह से गलत समझ को प्रदर्शित करता है।
- ❑ विकल्प D भौगोलिक रूप से गलत है क्योंकि यह बेरीगाजा को मालाबार तट पर और मुज़िरिस को गुजरात तट पर रखता है, जो पुरातात्विक साक्ष्यों और शास्त्रीय साहित्यिक स्रोतों दोनों के विपरीत है।

Q18. ऋग्वेद में कृषि का वर्णन कितने श्लोकों में किया गया है?

- (a) 12
(b) 20
(c) 24
(d) 105

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर (c) है।

ऋग्वेद के विशाल संग्रह में, जो मुख्य रूप से एक देहाती और अर्ध-खानाबदोश समाज को दर्शाता है, कृषि के संदर्भ अपेक्षाकृत सीमित हैं। विशेष रूप से, पूरे पाठ में केवल 24 श्लोकों में कृषि और संबंधित गतिविधियों का वर्णन किया गया है।

Information Booster

- ❑ ऋग्वेद चारों वेदों में सबसे पुराना है, जिसमें 1,028 सूक्त हैं जो 10 मंडलों में विभाजित हैं।
- ❑ प्रारंभिक वैदिक आर्य मुख्य रूप से एक देहाती समुदाय थे जिनकी संपत्ति मवेशियों (गोमत) में मापी जाती थी।
- ❑ नतीजतन, प्रारंभिक वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व - 1000 ईसा पूर्व) के दौरान कृषि एक माध्यमिक आर्थिक गतिविधि थी।
- ❑ ऋग्वेद के 10,462 श्लोकों में से केवल 24 श्लोक स्पष्ट रूप से कृषि (कृषि) का उल्लेख करते हैं।
- ❑ इन 24 श्लोकों में से अधिकांश IV (चौथे) मंडल में पाए जाते हैं, जिसे पारंपरिक रूप से ऋषि वामदेव को समर्पित माना जाता है।
- ❑ ऋग्वेद में लकड़ी के हल (सीर) के उपयोग का उल्लेख है, जिसे बैलों द्वारा खींचा जाता था। हल से बनी नालियों को 'सीता' कहा जाता था।
- ❑ ऋग्वेद में विशेष रूप से नामित एकमात्र अनाज 'यव' है, जिसका सामान्य अर्थ जौ है।

Additional Knowledge

- ❑ विकल्प A (12) और विकल्प B (20): ये गलत संख्याएँ हैं। प्रत्यक्ष कृषि संदर्भों के संबंध में वैदिक विद्वानों द्वारा स्थापित सटीक संख्या 24 है।
- ❑ विकल्प D (105): यह संख्या प्रारंभिक वैदिक अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताती है।
- ❑ केवल उत्तर वैदिक काल (1000 ईसा पूर्व - 600 ईसा पूर्व) के दौरान, लोहे (श्याम अयस) की खोज और गंगा के मैदानों की ओर पूर्व की ओर पलायन के साथ, कृषि प्राथमिक व्यवसाय बन गई।
- ❑ उत्तर वैदिक ग्रंथों (अथर्ववेद, ब्राह्मण) में कृषि अनुष्ठानों, विभिन्न प्रकार की फसलों (व्रीहि/चावल, गोधूम/गेहूं), और परिष्कृत खेती तकनीकों के विस्तृत विवरण मिलते हैं।

Q19. रोम में 23 ईसा पूर्व के दूसरे बंदोबस्त के हिस्से के रूप में ऑगस्टस को किस पद से वंचित किया गया था?

- (a) इम्परेटर
(b) पॉटिफेक्स मैक्सिमस
(c) ट्रिब्यूनस प्लेबिस

(d) प्राफेक्टस प्रेटोरियो

Ans.(d)

Sol. सही उत्तर (d) है।

23 ईसा पूर्व का दूसरा बंदोबस्त ऑगस्टस द्वारा रोमन गणराज्य के मुखौटे को बनाए रखते हुए अपनी पूर्ण शक्ति को मजबूत करने के लिए एक शानदार राजनीतिक पैतरेबाज़ी थी। उन्होंने अपार कानूनी शक्तियां हासिल कीं लेकिन एक तानाशाह की तरह दिखने से बचने के लिए जानबूझकर कुछ पदों से परहेज किया।

Information Booster

☑ दूसरे बंदोबस्त में, ऑगस्टस ने वाणिज्य दूतावास के अपने निरंतर कार्यकाल से इस्तीफा दे दिया, जिसने सीनेटरियल कुलीन वर्ग को अलग-थलग करना शुरू कर दिया था।

☑ बदले में, सीनेट ने उन्हें *उच्चतर प्रोकॉसलीय अधिकार* प्रदान किया, जिससे उन्हें अन्य सभी प्रांतीय गवर्नरों और सेना पर अधिकार मिल गया।

☑ उन्हें जीवन भर के लिए *ट्रिब्यूनशिआ पोटेस्टास* भी प्रदान किया गया था, जिससे उन्हें कानून को वीटो करने, सीनेट बुलाने और उनकी शारीरिक पवित्रता सुनिश्चित करने की अनुमति मिली।

☑ प्राफेक्टस प्रेटोरियो का कार्यालय उनके व्यक्तिगत अंगरक्षक को आदेश देने के लिए ऑगस्टस द्वारा बनाया गया एक बाद का अश्वारोही कार्यालय था, न कि एक रिपब्लिकन मजिस्ट्रेट जिसकी उन्होंने मांग की थी या उन्हें वंचित किया गया था।

☑ शीर्षक के बिना कार्यालयों की शक्तियों को धारण करके, ऑगस्टस ने प्रिंसिपेट के लिए संवैधानिक आधार बनाया।

☑ इसने उन्हें रिपब्लिकन राजशाही विरोधी प्रतिक्रिया को ट्रिगर किए बिना 'प्रथम नागरिक' के रूप में शासन करने की अनुमति दी जिसने जूलियस सीजर को मार डाला था।

Additional Knowledge

☑ विकल्प A एक ऐसा शीर्षक था जिसका उपयोग ऑगस्टस ने अपने सैन्य सर्वोच्च कमान पर जोर देने के लिए सक्रिय रूप से किया था, जो अंततः 'सम्राट' का पर्याय बन गया।

☑ विकल्प B, मुख्य पुजारी की भूमिका, एक ऐसा कार्यालय था जिसकी ऑगस्टस ने उत्सुकता से लालसा की थी, लेकिन 12 ईसा पूर्व में पदधारी लेपिडस की मृत्यु तक प्रतीक्षा की।

☑ विकल्प C तकनीकी रूप से ऑगस्टस के पास नहीं था क्योंकि वह गोद लेने के द्वारा एक पेट्रीशियन था; इसके बजाय, उसे कार्यालय के बिना ही ट्रिब्यून (tribunicia potestas) की 'शक्ति' प्रदान की गई थी।

☑ यह प्रश्न रोमन संवैधानिक इतिहास के गहन ज्ञान का परीक्षण करता है, विशेष रूप से कानूनी कल्पनाओं का जिसका उपयोग ऑगस्टस ने रोम को एक गणराज्य से एक साम्राज्य में बदलने के लिए किया था।

☑ दूसरे बंदोबस्त ने रोमन शाही प्रणाली के स्थायी ढांचे को मजबूती से स्थापित किया।

Q20. इल्तुतमिश ने दिल्ली में 'मदरसा-ए-मुइज्जी' स्कूल की स्थापना किसकी याद में की थी?

(a) कुतुबुद्दीन ऐबक

(b) बख्तियार काकी

(c) मुहम्मद गोरी

(d) नासिरुद्दीन महमूद

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर (c) है।

सुल्तान इल्तुतमिश ने दिल्ली में 'मदरसा-ए-मुइज्जी' की स्थापना मुहम्मद गोरी के सम्मान में की थी, जिनका मूल नाम मुइजुद्दीन मुहम्मद बिन सैम था।

Information Booster

- ❑ इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत का वास्तविक सुदृढीकरणकर्ता था।
- ❑ उसने दिल्ली में दो मदरसे स्थापित किए: मदरसा-ए-मुइज्जी और मदरसा-ए-नासिरी।
- ❑ ये संस्थान उलेमा को प्रशिक्षित करने में महत्वपूर्ण थे।
- ❑ पाठ्यक्रम धर्मशास्त्र और न्यायशास्त्र पर केंद्रित था।
- ❑ मिन्हाज-उस-सिराज को मदरसा-ए-नासिरी का प्रधानाचार्य नियुक्त किया गया था।

Additional Knowledge

- ❑ कुतुबुद्दीन ऐबक: इल्तुतमिश के ससुरा।
- ❑ बख्तियार काकी: एक सूफी संत, जिनके सम्मान में कुतुब मीनार का नाम रखा गया था।
- ❑ नासिरुद्दीन महमूद: इल्तुतमिश का पुत्र जिसकी याद में सुल्तान गद्दी बनाया गया था।

Q21. दुर्विनीत को पारंपरिक रूप से किसका संस्कृत संस्करण लिखने का श्रेय दिया जाता है?

- (a) पंचतंत्र
- (b) कथासरित्सागर
- (c) मेघदूत
- (d) बृहतकथा

Ans.(d)

Sol. सही उत्तर (d) है।

पश्चिमी गंग वंश के यशस्वी 6वीं शताब्दी के शासक दुर्विनीत को, गुणाढ्य की प्रसिद्ध लेकिन अल्पज्ञात पैशाची कृति 'बृहतकथा' का शास्त्रीय संस्कृत में अनुवाद करने के लिए शिलालेखों और साहित्यिक परंपरा में अत्यधिक सम्मानित किया जाता है।

Information Booster

- ❑ पश्चिमी गंग वंश के राजा दुर्विनीत न केवल एक महान योद्धा के रूप में पहचाने जाते थे, बल्कि शास्त्रीय साहित्य और व्याकरण के एक गहन विद्वान के रूप में भी गहराई से पूजनीय थे।
- ❑ गुणाढ्य का मूल महाकाव्य, बृहतकथा (महान वृत्तांत), मूल रूप से अल्पज्ञात, निम्न-स्तरीय पैशाची भाषा में लिखा गया था और अब दुर्भाग्य से इतिहास में खो गया है।
- ❑ दुर्विनीत के स्मारकीय संस्कृत अनुवाद ने कुलीन दर्शकों के लिए धर्मनिरपेक्ष भारतीय लोककथाओं और रोमांस के इस विशाल संग्रह के मूल सार और कथाओं को संरक्षित करने में सहायता की।
- ❑ समकालीन शिलालेख उन्हें भारवि की महान कविता, 'किरातार्जुनीय' के जटिल 15वें सर्ग पर एक विद्वत्पूर्ण टिप्पणी लिखने का भी अत्यधिक श्रेय देते हैं।
- ❑ उनके उदार शाही संरक्षण और अपार व्यक्तिगत योगदान ने प्रारंभिक मध्यकालीन कर्नाटक में संस्कृत सीखने और सांस्कृतिक विकास को महत्वपूर्ण बढ़ावा दिया।
- ❑ उनका लंबा शासनकाल संरचनात्मक रूप से पश्चिमी गंग राजनीतिक शक्ति और क्षेत्रीय विस्तार के पूर्ण चरमोत्कर्ष का प्रतीक था।

Additional Knowledge

- ❑ **A (पंचतंत्र):** परस्पर संबंधित पशु दंतकथाओं का एक विश्व स्तर पर प्रसिद्ध प्राचीन भारतीय संग्रह, जो मूल रूप से विद्वान विष्णु शर्मा द्वारा संस्कृत में रचित था, दुर्विनीत द्वारा अनुवादित नहीं।
- ❑ **B (कथासरित्सागर):** 'कहानियों की धाराओं का सागर' बृहतकथा का एक प्रसिद्ध 11वीं शताब्दी का संस्कृत रूपांतरण है, जिसे दुर्विनीत के सदियों बाद कश्मीरी शैव कवि सोमदेव द्वारा कुशलतापूर्वक संकलित किया गया था।

☑ C (मेघदूत): महान संस्कृत कवि कालिदास द्वारा खूबसूरती से रचित एक अत्यंत प्रसिद्ध शास्त्रीय गीतात्मक कविता (खंडकाव्य)।

Q22. प्रिंसिपेट के शासन के दौरान रोमन साम्राज्य के व्यापार के नेटवर्क को सबसे अच्छी तरह से वर्णित किया जा सकता है:

- (a) व्यापक, जिसमें भूमध्य सागर मारे नोस्ट्रम के रूप में कार्य करता था जिसने अनाज, जैतून का तेल, शराब और मिट्टी के बर्तनों जैसे सामानों की आवाजाही को सुविधाजनक बनाया
- (b) चीनी रेशम जैसी लकजरी वस्तुओं के लिए विशेष रूप से भूमिगत व्यापार पर केंद्रित।
- (c) राज्य द्वारा नियंत्रित जिसमें निजी व्यापारियों की बहुत कम या कोई भूमिका नहीं थी
- (d) 'बोतलबंद अर्थव्यवस्था', जिसमें अधिकांश वस्तुएं स्थानीय रूप से उत्पादित और उपभोग की जाती थीं

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर है: (A)

प्रिंसिपेट (ऑगस्टस के साथ शुरू होने वाले रोमन साम्राज्य के पहले चरण) के दौरान, रोमन अर्थव्यवस्था ने एक विशाल समुद्री व्यापार नेटवर्क पर अत्यधिक निर्भर, अभूतपूर्व एकीकरण और विस्तार की अवधि का अनुभव किया।

Information Booster

- ☑ रोमनों ने समुद्री डकैती को खत्म कर और पूर्ण नौसैनिक आधिपत्य स्थापित कर भूमध्य सागर को 'मारे नोस्ट्रम' (हमारा सागर) कहा।
- ☑ यह आंतरिक समुद्र साम्राज्य के विविध प्रांतों को जोड़ने वाले एक विशाल, कम लागत वाले सुपरहाइवे के रूप में कार्य करता था।
- ☑ व्यापार केवल विलासिता तक सीमित नहीं था; यह आवश्यक वस्तुओं के बड़े पैमाने पर थोक परिवहन द्वारा विशेषता थी।
- ☑ मिस्र और उत्तरी अफ्रीका ब्रेडबास्केट के रूप में काम करते थे, रोम की विशाल आबादी को खिलाने के लिए लाखों टन अनाज का निर्यात करते थे।
- ☑ स्पेन (हिस्पानिया) ने भारी मात्रा में जैतून के तेल का निर्यात किया, जबकि गॉल और इटली ने शराब और ठीक लाल-पर्ची वाले मिट्टी के बर्तनों (टेरा सिगिलाटा) का निर्यात किया।
- ☑ इस अवधि में पैक्स रोमाना (रोमन शांति) द्वारा संचालित, ऋण की अपेक्षाकृत परिष्कृत प्रणाली के साथ एक उच्च मुद्रिकृत अर्थव्यवस्था देखी गई।

Additional Knowledge

- ☑ विकल्प B गलत है। हालांकि सिल्क रोड पर भूमिगत व्यापार और विलासिता (रेशम, मसाले) के लिए भारत के साथ समुद्री व्यापार अत्यधिक आकर्षक था, लेकिन यह साम्राज्य के आर्थिक नेटवर्क का बड़ा हिस्सा नहीं था, जिस पर आंतरिक भूमध्यसागरीय व्यापार का दबदबा था।
- ☑ विकल्प C गलत है। जबकि राज्य ने 'अन्नोना' (रोम के लिए अनाज का अनुदान) जैसी महत्वपूर्ण आपूर्ति को नियंत्रित किया, एक विशाल, जीवंत और काफी हद तक अप्रतिबंधित निजी व्यापारी वर्ग (नेगोटिएटर्स और मर्काटोर्स) ने व्यापक अर्थव्यवस्था को चलाया।
- ☑ विकल्प D पूरी तरह से गलत है। 'बोतलबंद' स्थानीयकृत अर्थव्यवस्था बाद के, पतन के बाद के प्रारंभिक मध्ययुगीन काल (सामंतवाद) की एक विशेषता है, न कि अत्यधिक परस्पर जुड़े रोमन प्रिंसिपेट की।
- ☑ टूटे हुए एम्फोरा (रोम में मोटे टेस्टाशियो की तरह) के विशाल टीलों की खोज इस व्यापक थोक व्यापार का पुरातात्विक प्रमाण प्रदान करती है।

Q23. निम्नलिखित में से किसने 1904 के विश्वविद्यालय अधिनियम की आलोचना करते हुए टिप्पणी की थी कि भारतीय

विश्वविद्यालय दुनिया के सबसे सरकारी संस्थान बन गए हैं?

- (a) हंटर आयोग
- (b) राधाकृष्णन आयोग
- (c) सैडलर आयोग
- (d) रैले आयोग

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर है (c)।

सैडलर आयोग (आधिकारिक तौर पर 1917 का कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग) ने 1904 के भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम की कड़ी आलोचना की थी। इसने चतुराई से देखा कि 1904 के अधिनियम ने शैक्षणिक नियंत्रण को अत्यधिक केंद्रीकृत कर दिया था, जिससे भारतीय विश्वविद्यालय विश्व स्तर पर सबसे कड़ाई से सरकारी संस्थान बन गए थे।

Information Booster

☑ 1904 का विश्वविद्यालय अधिनियम लॉर्ड कर्जन के विवादास्पद वायसराय काल के दौरान पारित किया गया था, जिसने विश्वविद्यालय सीनेट और कॉलेज संबद्धता पर प्रत्यक्ष सरकारी नियंत्रण को कड़ा कर दिया था।

☑ सैडलर आयोग की नियुक्ति 1917 में डॉ. माइकल सैडलर की अध्यक्षता में मुख्य रूप से कलकत्ता विश्वविद्यालय के मामलों की समीक्षा के लिए की गई थी।

☑ इसने रेखांकित किया कि 1904 के अधिनियम द्वारा लगाए गए दमघोंटू नौकरशाही नियंत्रण ने शैक्षणिक स्वायत्तता और अनुसंधान विकास में भारी बाधा डाली।

☑ आयोग ने राज्य के नियंत्रण में भारी कमी और अधिक शैक्षणिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देने की जोरदार सिफारिश की थी।

☑ इसने माध्यमिक और मध्यवर्ती शिक्षा के स्वतंत्र बोर्ड स्थापित करके माध्यमिक शिक्षा को विश्वविद्यालय प्रशासन से अलग करने का भी सुझाव दिया।

☑ इसकी प्रगतिशील सिफारिशों ने बाद के दशकों में भारत भर में विश्वविद्यालय सुधारों को गहरा आकार दिया।

Additional Knowledge

☑ **हंटर आयोग:** वुड्स डिस्पैच के बाद शिक्षा की प्रगति की समीक्षा के लिए 1882 में बहुत पहले नियुक्त किया गया था।

☑ **राधाकृष्णन आयोग:** 1948 में स्वतंत्रता के बाद नियुक्त विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग।

☑ **रैले आयोग:** लॉर्ड कर्जन द्वारा 1902 में नियुक्त किया गया था; इसकी सिफारिशें ही प्रतिबंधात्मक 1904 अधिनियम का आधार बनी थीं, इसलिए यह अपने स्वयं के परिणाम की आलोचना नहीं कर सकता था।

Q24. अरबों द्वारा प्रतिहारों को कुछ अलग तरीके से संदर्भित किया गया था, वह शब्द क्या था?

- (a) रूमी
- (b) बल्लहारा
- (c) अल-जुज़्र
- (d) पुरुति

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर है (c)।

गुर्जर-प्रतिहार राजवंश, जिसने उत्तरी भारत में प्रारंभिक इस्लामी विस्तार के खिलाफ एक दुर्जेय गढ़ बनाया था, का प्रमुखता से प्रारंभिक अरब यात्रियों के भौगोलिक और ऐतिहासिक खातों में उल्लेख किया गया था। अल-मसूदी जैसे लेखकों ने विशेष रूप से उनके विस्तृत राज्य और इसके शक्तिशाली शासकों को 'अल-जुज़्र' शब्द से संदर्भित किया, जो 'गुर्जर' शब्द का एक अरबी भाषाई भ्रष्टाचार है।

Information Booster

- ☑ गुर्जर-प्रतिहारों ने 8वीं से 11वीं शताब्दी तक उत्तरी और पश्चिमी भारत के विशाल क्षेत्रों पर अपना दबदबा बनाया, और कन्नौज के लिए तीव्र त्रिपक्षीय संघर्ष में शामिल रहे।
- ☑ अरब इतिहासकारों, विशेष रूप से व्यापारी सुलेमान ने स्पष्ट रूप से प्रतिहार घुड़सवार सेना की सैन्य शक्ति की प्रशंसा की, उन्हें दुनिया में सबसे बेहतरीन माना।
- ☑ ये खाते एक साथ प्रतिहारों को भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लामी विश्वास के सबसे आक्रामक और दृढ़ दुश्मनों के रूप में पहचानते हैं।
- ☑ शक्तिशाली प्रतिहार राजा मिहिर भोज को विशेष रूप से अरब इतिहासकारों द्वारा सिंध के मुस्लिम अमीरों के प्रति उनकी अडिग शत्रुता के लिए नोट किया गया था।
- ☑ तीव्र सैन्य संघर्ष के बावजूद, अरब व्यापारियों को आमतौर पर प्रतिहार साम्राज्य की सीमाओं के भीतर शांतिपूर्वक व्यापार करने की अनुमति थी।
- ☑ 'अल-जुज़्र' शब्द विशेष रूप से विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र और गुर्जर वंश के शासक अभिजात वर्ग दोनों को दर्शाता है।

Additional Knowledge

- ☑ **रूमी:** इस शब्द का ऐतिहासिक उपयोग अरब और इस्लामी लेखकों द्वारा विशेष रूप से बंगाल के पाल साम्राज्य को दर्शाने के लिए किया गया था, अक्सर इसे धर्म की अवधारणा से जोड़ते हुए।
- ☑ **बल्लहारा:** यह 'वल्लभराज' का एक अरबी भाषाई भ्रष्टाचार है, जो एक प्रतिष्ठित उपाधि है जिसका उपयोग अरब व्यापारियों द्वारा लगातार दक्कन के शक्तिशाली राष्ट्रकूट राजाओं का वर्णन करने के लिए किया जाता है।
- ☑ **पुरुति:** यह भारतीय साम्राज्यों के अरब भौगोलिक विवरणों के संदर्भ में कोई मान्यता प्राप्त ऐतिहासिक महत्व के बिना एक गलत भटकाने वाला शब्द है।

Q25. सूची - I का सूची - II से मिलान करें:

- | | | |
|---------------------------------------|--|----------------------------------|
| सूची - I (शैक्षणिक संस्थान) | | सूची - II (द्वारा स्थापित) |
| (A) संस्कृत महाविद्यालय, बनारस | | (I) राजा राम मोहन राय, डेविड हरे |
| (B) कलकत्ता मदरसा (या मुहम्मदन कॉलेज) | | (II) रिचर्ड वेलेस्ली |
| (C) हिंदू कॉलेज, कलकत्ता | | (III) जोनाथन डंकन |
| (D) फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता | | (IV) वारेन हेस्टिंग्स |
- नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

- (a) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(II)
- (b) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(IV)
- (c) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)
- (d) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(IV), (D)-(III)

Ans.(a)

Sol. बनारस में संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना 1791 में हुई थी। इसकी स्थापना बनारस के ब्रिटिश निवासी जोनाथन डंकन ने संस्कृत और शास्त्रीय भारतीय साहित्य के अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए की थी। बाद में यह एक विश्वविद्यालय बन गया और 1974 में इसका नाम बदलकर सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय कर दिया गया।

कलकत्ता मदरसा की स्थापना अक्टूबर 1780 में वारेन हेस्टिंग ने की थी।

हिंदू कॉलेज, जिसे बाद में प्रेसीडेंसी यूनिवर्सिटी, कोलकाता के नाम से जाना गया, की स्थापना 1817 में कलकत्ता में हुई थी। यह एशिया में उच्च शिक्षा का पहला आधुनिक संस्थान था, जिसने बंगाल पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। कॉलेज की स्थापना से जुड़े लोगों में राजा राममोहन राय, राधाकांत देव, रसमय दत्त, बैद्यनाथ मुखोपाध्याय, डेविड हरे, सर एडवर्ड हाइड ईस्ट शामिल हैं।

फोर्ट विलियम कॉलेज, 1800 में ब्रिटिश भारत के गवर्नर-जनरल लॉर्ड वेलेस्ली द्वारा कलकत्ता (अब कोलकाता) में स्थापित किया गया था, जो प्राच्य अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण संस्थान और शिक्षा का केंद्र था। इसका प्राथमिक उद्देश्य ब्रिटिश अधिकारियों को भारतीय भाषाओं, साहित्य और संस्कृति में प्रशिक्षित करना था, जिसका उद्देश्य उनके प्रशासनिक कौशल और शासन को बेहतर बनाना था।

Q26. संगम साहित्य में कितने कवियों और कवयित्रियों ने योगदान दिया था?

- (a) 371
- (b) 473
- (c) 573
- (d) 775

Ans.(b)

Sol. सही उत्तर (b) है।

प्राचीन तमिल कविता का एक आधारभूत संग्रह, संगम साहित्य, कई शताब्दियों में रचा गया था। इस संग्रह के ऐतिहासिक और साहित्यिक विश्लेषण के अनुसार, इस शास्त्रीय तमिल साहित्य में उनके अमूल्य योगदान के लिए ठीक 473 कवियों और कवयित्रियों को आधिकारिक रूप से मान्यता प्राप्त है।

Information Booster

☑ संगम साहित्य दक्षिण भारत का सबसे प्राचीन ज्ञात साहित्य है, जिसकी रचना मुख्य रूप से प्राचीन तमिल भाषा में की गई है।

पारंपरिक रूप से यह माना जाता है कि इसे मदुरै में पांड्य राजाओं द्वारा संरक्षित तीन क्रमिक साहित्यिक सभाओं में संकलित किया गया था जिन्हें 'संगम' कहा जाता था।

संपूर्ण जीवित संग्रह में 473 ज्ञात कवियों द्वारा रचित 2,381 कविताएँ शामिल हैं, साथ ही कुछ गुमनाम रचनाएँ भी हैं।

☑ अवैय्यर जैसी प्रसिद्ध महिला कवयित्रियों ने अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया, जो संगम युग के दौरान महिलाओं की सम्मानित बौद्धिक और सामाजिक स्थिति को दर्शाता है।

☑ संगम कविता के विषयों को व्यापक रूप से 'अगम' (आंतरिक जीवन, प्रेम पर केंद्रित) और 'पुरम' (बाहरी जीवन, युद्ध, राजाओं और सार्वजनिक जीवन से संबंधित) में वर्गीकृत किया गया है।

☑ यह साहित्य चेर, चोल और पांड्य के राजनीतिक राजवंशों के बारे में गहन ऐतिहासिक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

☑ यह प्रारंभिक ऐतिहासिक दक्षिण भारत और रोमन साम्राज्य के बीच हलचल भरे व्यापारिक संबंधों का भी दस्तावेजीकरण करता है।

Additional Knowledge

☑ विकल्प A (371): यह एक गलत संख्या है। हालाँकि कविताओं की संख्या बहुत अधिक है, लेकिन पहचाने गए विशिष्ट योगदानकर्ताओं की संख्या 473 दर्ज है।

☑ विकल्प C (573): यह संख्या मान्यता प्राप्त संगम लेखकों की स्वीकृत ऐतिहासिक सर्वसम्मति को बढ़ा-चढ़ाकर बताती है।

☑ विकल्प D (775): यह तथ्यात्मक रूप से गलत है और पारंपरिक तमिल साहित्यिक वृत्तान्तों द्वारा समर्थित नहीं है।

☑

तमिल व्याकरण और काव्यशास्त्र पर एक आधारभूत कार्य, तोल्काप्पियम, इसी युग से निकटता से जुड़ा हुआ है।

Q27. गुरुमुखी लिपि किसके द्वारा शुरू की गई थी?

- (a) गुरु अर्जुन
- (b) गुरु अंगद

- (c) गुरु रामदास
(d) गुरु तेग बहादुर

Ans.(b)

Sol. सही उत्तर (b) है।

दस सिख गुरुओं में से दूसरे, गुरु अंगद देव को 16वीं शताब्दी में गुरुमुखी लिपि को औपचारिक रूप देने और लोकप्रिय बनाने का श्रेय दिया जाता है।

Information Booster

'गुरुमुखी' शब्द का शाब्दिक अनुवाद 'गुरु के मुख से' है।

इसके मानकीकरण से पहले, पंजाबी लंडा जैसी विभिन्न खंडित, अनौपचारिक लिपियों में लिखी जाती थी।

गुरु अंगद ने संस्थापक गुरु नानक देव के भजनों (बाणी) को सटीक रूप से रिकॉर्ड करने और संरक्षित करने के लिए वर्णमाला को मानकीकृत किया।

एक विशिष्ट लिपि के निर्माण ने उभरते हुए सिख समुदाय को एक अद्वितीय भाषाई और धार्मिक पहचान दी, जिससे उनके ग्रंथों को पारंपरिक संस्कृत (हिंदू) और अरबी/फारसी (इस्लामी) शास्त्रों से अलग किया गया।

इसके अलावा, गुरु अंगद ने समानता को बढ़ावा देने और जातिगत बाधाओं को खत्म करने के लिए *लंगर* (सामुदायिक रसोई) की संस्था का विस्तार किया।

Additional Knowledge

गुरु अर्जुन: पांचवें गुरु। उन्होंने 1604 में ऐतिहासिक *आदि ग्रंथ* को संकलित करने के लिए गुरुमुखी लिपि का उपयोग किया और हरमंदर साहिब (स्वर्ण मंदिर) का निर्माण प्रारंभ किया।

गुरु रामदास: चौथे गुरु, जिन्होंने प्रसिद्ध रूप से पवित्र शहर रामदासपुर की स्थापना की, जिसे बाद में अमृतसर के नाम से जाना गया।

गुरु तेग बहादुर: नौवें गुरु, जिनकी दिल्ली में मुगल सम्राट औरंगजेब के आदेश पर साहसी शहादत सिख इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ थी।

Q28. निम्नलिखित ग्रीको-रोमन भूगोलवेत्ताओं में से किसने भारत के साथ प्रतिकूल व्यापार संबंधों के कारण कीमती धातुओं की निकासी के बारे में विलाप किया था?

- (a) कॉसमॉस इंडिकोप्लुस्टस
(b) स्ट्रेबो
(c) प्लिनी द एल्डर
(d) टॉलेमी

Ans.(c)

Sol. सही उत्तर है: (C)

शुरुआती सदियों CE के दौरान रोमन साम्राज्य और भारत के बीच गहन समुद्री व्यापार अत्यधिक आकर्षक था, लेकिन यह भारत के पक्ष में बहुत अधिक झुका हुआ था। इस व्यापार असंतुलन ने प्रसिद्ध रूप से रोमन लेखक प्लिनी द एल्डर के क्रोध को भड़काया।

Information Booster

प्लिनी द एल्डर ने पहली शताब्दी CE में लिखे गए अपने स्मारकीय विश्वकोश कार्य 'नेचुरलिस हिस्टोरिया' (प्राकृतिक इतिहास) में इस व्यापार का दस्तावेजीकरण किया।

उन्होंने प्रसिद्ध रूप से विलाप किया कि विलासिता के सामानों के भुगतान के लिए रोमन धन की एक बड़ी राशि - जिसका अनुमान सालाना 50 मिलियन सेस्टर्स है - भारत में जा रही थी।

इस निकासी को चलाने वाले प्राथमिक आयात भारतीय काली मिर्च, मसाले, मोती, रत्न और बढ़िया वस्त्र (मलमल) थे। चूंकि रोमनों ने बदले में भारतीयों की चाहत वाली चीजों का बहुत कम उत्पादन किया, इसलिए घाटे को कठोर मुद्रा में, विशेष रूप से उच्च गुणवत्ता वाले रोमन सोने (ऑरियस) और चांदी (डेनेरियस) के सिक्कों में तय करना पड़ा। प्लिनी की शिकायत की पुष्टि पूरे दक्षिण भारत में, विशेष रूप से चेर, चोल और पांड्यों द्वारा शासित क्षेत्रों में पाए जाने वाले रोमन सिक्कों के विशाल ढेरों से होती है। उनका विलाप विलासिता के व्यापार की प्रारंभिक वैश्वीकृत प्रकृति और इसके व्यापक आर्थिक प्रभावों को उजागर करता है।

Additional Knowledge

विकल्प A (कॉसमॉस इंडिकोप्लुस्टस) छठी शताब्दी के एक यूनानी व्यापारी और भिक्षु थे जिन्होंने 'क्रिश्चियन टोपोग्राफी' लिखी थी, जिसमें भारत और श्रीलंका के साथ व्यापार का वर्णन किया गया था, लेकिन वह विशिष्ट 'धन की निकासी' के विलाप के लिए प्रसिद्ध नहीं हैं।

विकल्प B (स्ट्रैबो) एक यूनानी भूगोलवेत्ता थे जिनका काम 'जियोग्राफिका' मिस्र के रास्ते भारत के मार्ग का विवरण देता है, जो ऑगस्टस के तहत व्यापार में वृद्धि को ध्यान में रखता है, लेकिन इसमें बुलियन ड्रेन के बारे में प्लिनी की नैतिक शिकायत का अभाव है।

विकल्प D (टॉलेमी) दूसरी शताब्दी के खगोलशास्त्री और भूगोलवेत्ता थे, जिनका 'जियोग्राफिया' भारतीय तटीय बंदरगाहों और अंतर्देशीय शहरों का अत्यधिक विस्तृत, हालांकि कभी-कभी त्रुटिपूर्ण, मानचित्र प्रदान करता है, न कि आर्थिक आलोचना।

Q29. निम्नलिखित ऐतिहासिक घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें (सबसे पहले से नवीनतम):

- A. अजातशत्रु का लिच्छवियों के साथ युद्ध
- B. अशोक का राज्याभिषेक
- C. सिकंदर की मृत्यु
- D. बृहद्रथ की हत्या

- (a) A, C, B, D
- (b) A, B, C, D
- (c) A, D, B, C
- (d) C, B, A, D

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर (a) है।

ये स्मारकीय घटनाएँ एक प्रारंभिक साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में मगध के उदय से लेकर मौर्य साम्राज्य के नाटकीय पतन तक प्राचीन भारत के राजनीतिक विकास का पता लगाती हैं। इस भव्य वृत्तांत को समझने के लिए उचित कालानुक्रमिक व्यवस्था आवश्यक है।

Information Booster

अजातशत्रु का लिच्छवियों के साथ युद्ध (A) मगध पर हर्यक वंश के शासन (5वीं शताब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत) के दौरान हुआ था, जिसने गंगा घाटी में मगध की सर्वोच्चता को मजबूत किया था।

सिकंदर महान की मृत्यु (C) 323 ईसा पूर्व में बेबीलोन में हुई थी, उत्तर-पश्चिमी भारत में उनके अभियानों के तुरंत बाद, जिसने चंद्रगुप्त मौर्य के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।

अशोक का राज्याभिषेक (B) लगभग 268 ईसा पूर्व में हुआ था, जिसने एक ऐसे शासन की शुरुआत की जिसने मौर्य राज्य को बदल दिया और भारतीय धार्मिक इतिहास को गहराई से प्रभावित किया।

बृहद्रथ की हत्या (D) लगभग 185 ईसा पूर्व में हुई थी जब अंतिम मौर्य सम्राट को उनके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने मार दिया था, जो मौर्य वंश के अंत का प्रतीक था।

यह क्रम प्राचीन भारतीय भू-राजनीतिक परिवर्तनों के लगभग 300 वर्षों को कवर करता है।

Additional Knowledge

विकल्प B गलत तरीके से अशोक के राज्याभिषेक को सिकंदर की मृत्यु से पहले रखता है। सिकंदर की मृत्यु 323 ईसा पूर्व में हुई थी, इससे पहले कि अशोक के दादा चंद्रगुप्त द्वारा मौर्य साम्राज्य स्थापित किया गया था।

विकल्प C गलत तरीके से सुझाव देता है कि मौर्य साम्राज्य अशोक के राज्याभिषेक और सिकंदर की मृत्यु से पहले ही ढह गया था (बृहद्रथ की हत्या), जो मौर्य समयरेखा को पूरी तरह से उलट देता है।

विकल्प D गलती से सिकंदर की मृत्यु को सबसे पुरानी घटना के रूप में रखता है, पूर्ववर्ती हर्यक वंश और अजातशत्रु की विजयों की पूरी तरह से अनदेखी करता है जो बुद्ध के समकालीन थे।

Q30. संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के इतिहास में ऐतिहासिक मील के पत्थर को उनके संबंधित वर्षों के साथ मिलाएँ:

सूची-I	सूची-II
A. ट्रेल ऑफ टियर्स (चेरोकी की जबरन बेदखली)	1. 1781
B. भारतीय पुनर्गठन अधिनियम	2. 1838
C. ब्रिटिश अमेरिका को एक स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता देते हैं	3. 1876
D. कनाडाई 'भारतीय अधिनियम'	4. 1934

(A). A-2, B-4, C-1, D-3

(b) A-4, B-2, C-3, D-1

(c) A-2, B-1, C-4, D-3

(d) A-3, B-4, C-1, D-2

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर है (a)।

यह प्रश्न मूल अमेरिकी इतिहास और उत्तरी अमेरिकी राजनीतिक विकास से संबंधित प्रमुख मील के पत्थर की कालानुक्रमिक समझ का परीक्षण करता है। ट्रेल ऑफ टियर्स 1838 में हुआ था, यूएस इंडियन पुनर्गठन अधिनियम 1934 में पारित किया गया था, अमेरिका की ब्रिटिश मान्यता प्रभावी रूप से 1781 में यॉर्कटाउन के साथ शुरू हुई थी, और कनाडाई भारतीय अधिनियम 1876 में अधिनियमित किया गया था।

Information Booster

ट्रेल ऑफ टियर्स (1838) दक्षिण-पूर्वी अमेरिका से चेरोकी नेशन के मिसिसिपी नदी के पश्चिम में निर्दिष्ट 'भारतीय क्षेत्र' में क्रूर जबरन स्थानांतरण को संदर्भित करता है, जिसके परिणामस्वरूप हजारों मौतें हुईं।

भारतीय पुनर्गठन अधिनियम (1934), जिसे व्हीलर-हावर्ड अधिनियम के रूप में भी जाना जाता है, एक अमेरिकी संघीय कानून था जिसका उद्देश्य मूल अमेरिकियों के आत्मसात के पारंपरिक लक्ष्य को उलटना था, जो आदिवासी स्व-शासन को प्रोत्साहित करता था।

अंग्रेजों ने आधिकारिक तौर पर 1781 में यॉर्कटाउन की निर्णायक घेराबंदी के बाद अमेरिका को एक स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता दी, जिसने 1783 में पेरिस की औपचारिक संधि का मार्ग प्रशस्त किया।

कनाडाई 'भारतीय अधिनियम' (1876) ने पिछले औपनिवेशिक नियमों को एक एकल संघीय कानून में समेकित किया, जिससे कनाडाई सरकार को फर्स्ट नेशंस की पहचान, राजनीतिक संरचनाओं और सांस्कृतिक प्रथाओं पर व्यापक अधिकार मिले।

उत्तरी अमेरिका में स्वदेशी आबादी के संबंध में व्यवस्थित विस्थापन, प्रशासन और अंतिम नीतिगत बदलावों पर नज़र रखने के लिए इन तिथियों को समझना महत्वपूर्ण है।

ये विधायी मील के पत्थर राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए जोर और एक साथ मूल लोगों के हाशिए पर जाने के बीच के अंतर को उजागर करते हैं।

